EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 3, Issue 2, July-December, 2014, Available online at: www.eduzonejournal.com

संगीत का मानव जीवन में महत्व

डॉ0 सुदेश कुमारी

सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग, गोकुल दास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद
(एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली)

मानव जीवन में जन्म से मृत्यु तक सम्पूर्ण जीवन काल में संगीत पूर्ण रूप से आच्छदित रहता है संगीत में प्रारम्भ होकर उसकी जीवन यात्रा संगीत पर ही समाप्त हो जाती है। जहाँ जन्म लेते हो, बधाई के रूप में उसे बधाई गीत सुनाई देते है, तो कही जच्चा–बच्चा के गीत, ईश्वर को धन्यवाद देते मंगल गान, प्रार्थनाये, ईश वन्दना, श्लोक इत्यादि संगीत के ही अनेकों सुन्दर रूप है जो मन मस्तिष्क को पूर्ण प्रभावित करते है और सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करते हैं।

संगीत मानव जीवन की कलात्मक उपलब्धियों और सांगीतिक सांस्कृतिक परम्पराओं का मूर्तिमान प्रतीक है। यह आदिम काल से जन जीवन के आत्मिक उल्लास और सुखानुभूतियों की ललित अभिव्यक्ति का मधुरतम माध्यम रहा है। शास्त्रीय स्थापना के अनुसार "गीतम् वाद्यम् तथा नृत्यम् त्रंय संगीतमुच्यते" गायन वादन तथा नर्तन की त्रिवेणी संगम ही संगीत है।

संगीत की इस त्रिवेणी संगम का विस्तार असीम, अछोर तथा अविनश्वर है। मानव मात्र से ही नही, प्रत्युत समूची सृष्टि और प्रकृति के कण–कण म संगीत सरिता का कर्णप्रिय कल–कल निनाद व्याप्त है। ओंकार रूप सार्वभौम सत्तो को ही नादबह्म की संज्ञा दी गई है। विश्व की विभिन्न मानव जातियों का अनेक धर्म विविधताओं की पूजा अर्चना और भक्ति साधना का माध्यम गायन संकीर्तन ही रहा है। संगीत की यह भावात्मक एकता एक सार्वभौमिक, सार्वकालिक आत्मीयता और बन्धुत्व का प्रतीक है। संगीत एक ऐसा विश्व–व्याप्त स्नेह सूत्र है जो हर समय विश्व का प्राकृतिक विधि और मानवीय असंगति का एक मधुरतम और मौलिक एकता की अनुभूति से आबद्ध करता है।

जिस प्रकार मानव ने अपनी भौतिक आवश्यकता की पूति (आग, पहिए, यातायात के साधन इत्यादि) की उसी प्रकार उसने अपनी मानसिक तुष्टि के लिये लालित्यपूर्ण सौंदर्यात्मक सुमधुर संगीत को भी आत्मसात कर लिया। संगीत ने मानव को आत्मिक संतुष्टि के साथ परम आनन्द को भी अनुभूति कराई जो अन्य साधनों, प्रयत्नों से उसे प्राप्त नहीं हो सकती थी। साथ ही संगीत के द्वारा उसे जो अत्यधिक आनन्दित सुखानुभूति प्राप्त हुई वह अन्य किसी भी विषयगत वस्तु से उसे नहीं मिल पाई। इसलिये उसने संगीत को आत्मिक रूप से जीवन में सर्वोच्च स्थान दिया, क्योंकि संगीत ने ही उसे अत्यधिक शान्ति प्रदान की। भौतिकवादी परिवेश ने जहाँ उसके जीवन में तीव्रगति से उथलपुथल मचाई, वहीं उसने संगीत में ठहराव को महसूस किया, जो उसके मन की शान्ति के लिये अनिवार्य था। संगीत के गेय रूप का भजन कीर्तन करके ईश्वर के काफी निकट पहुँचा जा सकता है इसीलिये धार्मिक संगीत की महत्ता को सभी ने स्वीकार किया है क्योंकि भगवत भजन से धर्म, राजाओं, प्रभुओ से मिले सम्मान के रूप में अर्थ, अर्थ से काम, तथा अन्नतः मोक्ष प्राप्ति का यही एक मात्र साधन है। जन जीवन में पारस्परिक सौहार्द का अधिक्य भी इसी के परिणामस्वरूप आया, जिसका प्रभाव मानवीय समाज म सर्वज्ञ दिखाई देता है। संगीत मण्डलियो संगीत सम्मेलनों संगीत सभाओ सार्वजनिक स्थलों पर मुखरित होता है।

इस प्रकार संगीत में पारम्परिक जीवन की जटिलताओं को दूर करके उनमें सरसता और मधुरता प्रदान की। मानवीय स्वास्थ्य की दृष्टि से भी आध्यात्मिक तथा धार्मिक विचार मानव के चरित्र सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, सभी परिस्थितियों के लिये लाभप्रद होते है। इसलिये संगीत समाज की न केवल आवश्यकता बन गई वरन् मन मस्तिष्क को तृप्त करने वाली संजीवनी भी है।

मानव ने जन्म लेते ही अपने आसपास के प्राकृति प्रदत्त वस्तुओं को देखकर ही सर्वप्रथम उसने संगीत को अनुभव किया होगा जिस प्रकृति के मानवीय संरचना को विकसित किया उसी प्रकृति माँ की गोद में उसके आयामों, स्थितियों, सुमधुर वातावरण अनुशासित वस्तुओं को देखकर ही संगीत सृजित करने का भाव उसके अर्न्तमुखी मन से निःसंदेह उपजा होगा। ऐसी कल्पना निराधार नहीं हो सकती उसके दैनिक जीवन में सांसरिक समाज में विचरण करते पक्षियों का कलरव, झरनों का झंकृत प्रवाह बादलों का गर्जन, नदियों का अविरल, कलकल, वर्षा का टिप–टिप भंवरों की गुजार, वायु की सनसनाहट इत्यादि में पर्याप्त संगीत का प्रभाव अनुभूत किया होगा।

यही अनुभूति उसके जीवन में संगीत के महत्व को दर्शाता है। जब कोई वस्तु हमें केवल आनन्द देती है या जब किसी वस्तु में रूचि लेने लगते हैं तो हमारा समस्त मस्तिष्क सुन्दरता से या सौन्दर्य से भर जाता है और हम उसके नाम में असीमित डूब जाते हैं इसी प्रसन्नता के अनुरूप से हम सौन्दर्य का आनन्द लेते है। इस सौन्दर्य के अनुभवन से एक प्रकार की असीम शान्ति प्राप्त होती है। अतः साधारणता आनन्द या भावनात्मक आनन्द को सौन्दर्यानुभूति कह सकते है और इसे ही किसी कला चाहे चित्रकला, वस्तुकला या फिर संगीत कला का कलात्मक सौन्दर्य कहा जाता है। ललित कलाओं में संगीत का स्थान सर्वश्रेष्ट माना जाता है। एक गायक या वादक उस समय आत्मा के आलोक से चमचमाते स्वर जीव की सम्पूर्ण वेदना लेकर उत्कृष्ट संगीत को जन्म देते हैं ऐसे ही संगीत को सुनकर सभी श्रोता उन्मुक्त अवस्था का अनुभव करते हैं। प्रत्येक कार्य में संगीत की अहम् भूमिका और महत्व होता है बिना संगीत के कोई भी कार्य करने में नीरसता का आभास होता है। भारत में तो कोई भी कार्य संगीत के बिना जिन्दगी के किसी क्षण की उसे रंगीन रसमय बनाने की कल्पना तक नहीं कर सकते बच्चें का जब जन्म होता है तब भी मंगल गीत गाये जाते है, उसके जन्मोत्सव, मुंडन, विवाह आदि अवसरों पर भी सांगीतिक विधाओं की प्रस्तुती अवश्य होती है।

विद्यालयों के नीरस पाठ्यकर्मों को जब संगीत के माध्यम से बच्चों को याद कराया जाता है तब वे जल्दी याद हो जाता है यह संगीत का ही प्रभाव है, आज विद्यालयों में सगीत शिक्षकों की नियुक्ति की जा रही है, विद्यालयों में छात्रों को संगीत शिक्षा प्राप्त हो रही है प्रत्येक कार्य संगीत के बिना आरम्भ नहीं होते संगीत सभा के जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करता है मनुष्य अपने सुख दुख को संगीत के माध्यम से महसूस करता है और अपने जीवन को शान्ति पूर्ण बनाता है। आज संगीत से उपचार भी किये जा रहे है जिसके कारण हमारे स्वास्थ्य पर प्रभावात्मक असर पड़ता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि संगीत हमारे शरीर और मन, मस्तिष्क को स्वस्थ बनाने में हमारी सहायता करता है। संगीत मानवीय संस्कारां, रीति, धर्म, परम्पराओं और उसके जीवन में अनेकों रंग बिखेरता है। प्लेटों के अनु संगीत के माध्यम से आत्मा लय सीख जाती है संगीत चरित्र बनाता है। उसमें कर्म की प्रवृत्ति आ जाती है और वह कभी भी अन्याय नहीं कर सकता क्योंकि वह स्वर वह कभी भी अन्याय नहीं कर सकता क्योंकि वह स्वर लहरों में बँधा होता है।

To summarise what is Music, one can safety say it is a kind of Yoga system through the medium of Sonorus sound which Act upon the human organism and Awaken and develop their proper function to the extent of self realization & the ultimate goal of Hindu Philosophy or religion-

इससे इस कथन की पुष्टि होती है कि संगीत एक यौगिक विद्या है जिसकी तीव्र तथा तीव्रतर ध्वनियाँ मनुष्य के सूक्ष्म स्नानुयों को झंकृत कर सुषुप्त कुण्डलियों को जागृत कर देती हैं तथा मानवता को आत्मोत्रति की चरम सीमा, मोक्ष के द्वारा तक पहुंचा देती है जो भारतीय जीवन दर्शन का अंतिम लक्ष्य है। स्वयं भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है,

नाहं वसामि बैकुण्ठे, योगिनां, हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्त्रि, तत्र तिष्ठामि नारद।।

मानवीय संस्कारों, रीति धर्म, परम्पराओं, इत्यादि में पूर्ण संगीत आच्छादित है। बच्चे के जन्म से आरम्भ होकर उसके सोलह से संस्कारओं में संगीत का विशेष महत्व होता है। घर में कोई भी मंगल कार्य बिना संगीत के सम्भवन नहीं है। मंगल गान भजन, कीर्तन, संकीर्तन, ईशवंदना प्रार्थनाएं, इत्याधि से आरम्भ होकर ही कोई नवीन कार्य प्रारम्भ किया जाता है। जिस प्रकार मानव की जीवन यात्रा प्रकृति के समक्ष जन्म लेने प्रकृति के

विभिन्न स्पन्दनों को सुनने, अनुभवन करने और विभिन्न प्रक्रियाओं से निवृत्त होकर श्मशान की यात्रा में समाप्त हो जाती है। घंटे घड़ियाल और रामनाम सत्य की ध्वनिया के साथ उसका स्थूल शरीर पंचतत्तवों से ही बना माना जाता है तथा इन्हीं में विलीन हो जाता है। व्यक्ति की अन्तिम यात्रा में अन्य सभी व्यक्ति सामूहिक रूप से बताते हैं कि रामनाम ही सत्य है। अन्य सभी असत्य अतः राम (ईश्वर) के स्वरूप को पहचान कर उसके समीप रहना ही श्रेयस्कर व मुक्ति का प्रतीक है। इसीलिए व्यक्ति के मरणोपरांत सभी व्यक्ति एक स्वर में राम नाम ही सत्य है, गीत सामूहिक रूप में गाते हं।

अतः मानव के जीवन में संगीत का प्रवेश उसके जन्म के समय नेत्र खोलने के साथ ही रह जाता है और आँखें बन्द होने के बाद भी संगीत की ध्वनि उसे आप्लांवित करती रहती है। संगीत मानव के जीवन का सबसे सुन्दर पक्ष है जो आशा, निराशा के क्षणों में भी केवल मन मस्तिष्क को आनन्द प्रदान करता है, और उसके जीवन में अनेकों रंग बिखरेता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1– संगीत निबन्ध संग्रह, प्रो0 हरिशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ 94
2– तबला पुराण, प्रो0 विजय शंकर मिश्र, पृष्ठ 212
3– संगीत निबन्धसंग्रह, प्रो0 हरिशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ 96